उत्तराखंड की चार धाम तीर्थयात्रा

डॉ दीपक कुमार
रूड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
8791769567

उत्तराखण्ड हिमालयी क्षेत्र पुरातन काल से ही तीर्थ–मंदिरों के रूप में अनेकों देवी–देवताओं का निवास स्थल रहा है। इसी देवभूमि में महाभारत एवं रामायण काल से ही ऋषि–महात्मा एवं महापुरूष जप–तप आदि कर्मों एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु धार्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर यहाँ आते रहे है। हिमालय पुरातन मानव की शरणस्थली एवं मानव संस्कृति का प्रसार केंद्र भी रहा है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का सृजन उत्तराखण्ड हिमालय की इन कन्दराओं में ऋषि–मुनियों ने कठोर तप एवं साधना द्वारा किया। इसी क्षेत्र में सप्त ऋषियों में मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्थ, पुलह, कतु एवं वशिष्ठ आदि के आश्रम से उद्‌गम होने वाली गंगा, यमुना आदि सदानीरा नदियों ने विश्व में भारतीय संस्कृति के यश–गौरव को पौराणिक काल से बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हैं। इसीलिए भारतीय संस्कृति को 'गंगा–यमुना संस्कृति' भी कहा गया है। अनादि काल से ही ये जलधाराएं तीर्थ–यात्रियों के प्राण धारा के रूप में अविरल गति से प्रवाहमान रही हैं। इन नदी–तटों के संगमों में अनेक तीर्थ–स्थलों का विकास हुआ। अलकापुरी से निकलने वाली अलकनन्दा के तट पर भगवान बदरीनाथ का धाम, मन्दाकिनी के तट पर केदारनाथ धाम, हिमालय के गोमुख हिमनद से निकलने वाली जलधारा के तट पर गंगोत्री धाम एवं सूर्य पुत्री यमुना यमुनोत्री कांठा हिमालय शिखर से जलधारा के रूप में निकलकर यमुनोत्री धाम के रूप में हिन्दू सनातनी परम्परानुसार पूज्यनीय तीर्थों के रूप में जन–जन की आस्था एवं विश्वास का केंद्र बिंदु है।

प्राचीन काल से ही हिमालय क्षेत्र में तीर्थयात्रा के अनेक प्रमाण वेद–पुराण एवं धर्म ग्रन्थों में वर्णित हैं। उत्तराखण्ड हिमालयी क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, हरे–भरे वनों, पर्वतों से बहने वाली सदानीरा नदियों, झरनों, सुरम्य घाटियों, प्राचीन मठ–मन्दिरों एवं ऋषि–मुनियों के आश्रमों, धर्म, संस्कृति एवं आध्यात्म की पावन भूमि के रूप में विश्व विख्यात रहा है। अतः इस क्षेत्र ने धर्म प्रेमियों, प्रकृति प्रेमियों, तपस्वियों को अपनी ओर आकर्षित किया है। धर्मनिष्ठ जनों द्वारा इसी क्षेत्र में प्राचीन तीर्थ परम्परा का विकास हुआ। जब सड़क, रेल, यातायात का विकास नहीं हुआ था तो प्राचीन काल में तीर्थयात्रा पैदल होती थी। तीर्थ–धामों की यात्रा का विशेष महत्व था। मनुष्य अपने वानप्रस्थ आश्रम में पहुंचकर तीर्थयात्रा को मोक्ष प्राप्ति का साधन मानता था। इसी उद्देश्य से उत्तराखण्ड हिमालय में स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री एवं गंगोत्री धाम की तीर्थयात्रा हेतु मनुष्य दुर्गम बीहड़ एवं घने जंगलों, पर्वतीय मार्गों की कठिन चढ़ाई युक्त मार्गों से होकर अपने शारीरिक कष्टों को आत्मसात करते हुए इन तीर्थस्थलों में पहुँचते थे। मान्यतानुसार धार्मिक स्थलों की पैदल यात्रा करके भगवान के द्वार तक पहुँचना पुण्य एवं मोक्ष प्राप्त करना होता था। इसी परम्परानुसार आज भी उत्तराखण्ड में तीर्थयात्रा सदियों से अनवरत रूप से चली आ रही है।

उत्तराखण्ड तीर्थ–यात्रा :–गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ

उत्तराखण्ड हिमालय में पाण्डवों की तीर्थ यात्रा

मातृ–पितृ भक्त श्रवण कुमार की तीर्थ यात्रा

कैलाश मानसरोवर यात्रा

नंदा देवी राजजात यात्रा

उत्तराखण्ड हिमालय में पौराणिक तीर्थ यात्रियों के अनेक विवरण....

उत्तराखण्ड हिमालय पौराणिक काल से ही अति महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। पौराणिक काल से ही यहाँ अनेक देवी–देवताओं की निवास स्थली होने के कारण उनकी पूजा–अर्चना, शैव, वैष्णव, शाक्त देवी–देवताओं के रूप में की जाने लगी थी। इसी आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक वातावरण ने प्राचीन समय से ही देश के कोने–कोने से तपस्वी, ईश्वर भक्त एवं प्रकृति प्रेमी जनों को अपनी ओर आकर्षित किया। प्राचीन स्थानों में पहुँचने वाले तीर्थ यात्रियों के अनेक विवरण प्राप्त होते हैं।

बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री एवं कैलाश मानसरोवर आदि का प्रसिद्ध तीर्थों के रूप में विकसित होना, यहाँ के स्थानीय लोगों के लिए सांस्कृतिक, धार्मिक एवं कलात्मक क्रियाकलापों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। रामायण एवं महाभारतकाल से ही उत्तराखण्ड हिमालय में राजा–महाराजाओं, ऋषि–मुनियों एवं सिद्ध पुरूषों द्वारा तीर्थयात्रा किये जाने के अनेक विवरण प्राप्त होते हैं। गंगा के प्रवेश द्वार हरिद्वार तथा ऋषि मुनियों की तपोभूमि–ऋषिकेश से लेकर हिमालय शिखरों में स्थित गुफाओं–कंदराओं एवं हिमालय में युगों–युगों से विराजमान तीर्थ एवं शक्ति पीठों के चमत्कारिक प्रभावों ने मानव कल्याण के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। इसलिए पौराणिक काल से ही इस हिमालयी प्रदेश में तीर्थयात्रा का विधान रहा है। पौराणिक ग्रन्थ शिवपुराण (कोटि रूद्रसंहिता) में' पाण्डवों का उल्लेख आता है कि ''महाभारत युद्ध के पश्चात् पाण्डवों को महर्षि वेद व्यास ने गुरू हत्या और गोत्र हत्या के पाप से मुक्ति के लिए केदारनाथ दर्शन करने का

आदेश दिया। पांचों पाण्डव जब केदारनाथ क्षेत्र में केदारनाथ (शिव) के दर्शन करने के लिए पहुँचे तो भोलेनाथ ने उन्हें गोत्र हत्या का दोषी जानकर दर्शन नहीं दिये। शिव महिष या भैंसे का रूप धारण करके भूमिगत होने लगे। तभी भीम ने दौड़कर उन्हें पकड़ लिया। भगवान शंकर पाण्डवों की व्याकुलता, अधीरता, भक्ति एवं श्रद्धा को देखकर साक्षात प्रकट हुए तथा उन्हें पाप–मुक्ति हेतु पृष्ठ भाग की पूजा–अर्चना का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गये। कहा जाता है कि केदारनाथ में महिष के पृष्ठ भाग की शिलारूप में तभी से पूजा–अर्चना आरंभ हुई। अग्रभाग जो नेपाल जाकर प्रकट हुआ वह 'पशुपतिनाथ' कहलाया। महिष के सभी अन्य भाग जैसे बाहु तुंगनाथ में, मुख रूद्रनाथ में, नाभि मद्दमहेश्वर में, जंघा कल्पेश्वर में विराजमान हुए। ये सभी स्थान 'पंचकेदार' के नाम से विख्यात हैं। आज लाखों तीर्थ यात्री इन पंचकेदार तीर्थों के दर्शन हेतु प्रतिवर्ष मई से सितम्बर माह के मध्य यहाँ आते हैं और पुण्य प्राप्त करते हैं।

पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार सम्पूर्ण हिमालय पर्वत को भगवान शिव का निवास स्थान एवं उनका आधिपत्य स्थल माना जाता है। हिमालय में स्थित बद्रीनाथ धाम को विष्णु या वैष्णव धाम माना गया है। एक पौराणिक कथा आती है कि ''जब भगवान नारायण ने बद्री वन की प्राकृतिक सौन्दर्य एवं छठा देखकर इसी भूमि में रहने का निश्चय किया और वे शिशु रूप धारण करके विचरण करने लगे तब इस शिशु का वात्सल्य प्रेम देखकर माता पार्वती इन्हें उठाकर अपने घर कैलाश ले आयी। शिशु को घर के अन्दर छोड़कर शिव एवं पार्वती वहाँ स्थित तप्त कुण्ड में स्नान करने चले गये। काफी देर बाद जब वे स्नान करके वापस लौटे तो उन्हें आभास हुआ कि दरवाजा अन्दर से बन्द हो चुका है। उन्होंने बालक से काफी अनुनय–विनय करके दरवाजा खुलवाना चाहा लेकिन दरवाजा नहीं खुलवा सके। तब उन्हें स्वयं आभास हुआ कि भगवान विष्णु शिशु रूप में हिमालय की मनोरम घाटी में स्थापित होने आये हैं। तभी शिव पार्वती यहाँ से केदार क्षेत्र में चले गये थे। तभी से बद्रीधाम 'विष्णुधाम' बन गया। वर्तमान में इस बद्रीनाथ धाम में लाखों तीर्थयात्री यात्रा करके पुण्य प्राप्त करते है।

उत्तराखण्ड में तीर्थयात्रा परम्परा को जीवंत रखने का श्रेय आदि गुरू शंकराचार्य को जाता है। उन्होंने केरल से 12 वर्ष की आयु में हिमालय की ओर प्रस्थान किया। हिन्दू धर्म प्रतिस्थापित करके बद्रीनाथ धाम में मूर्ति स्थापना करके जोशीमठ (ज्योर्तिमठ) में प्रधान मठ बनाया। यहीं पर बद्रीकाश्रम के निकट व्यास गुफा में रहकर ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता तथा प्रधान उपनिषदों पर ''भाष्य ग्रन्थ'' लिखे। हिन्दू धर्म को पुनः स्थापित कर उन्होंने केदारनाथ में 820 ई0 में 32 वर्ष की आयु में प्राण त्याग दिये। हिन्दू धर्म में उन्हें 'शिव का अवतार' माना जाता है। उन्होंने चार मठों की स्थापना करके तीर्थयात्रा परम्परा के महत्व को निरापद बनाया। उत्तराखण्ड हिमालय में तब से अनवरत रूप से तीर्थयात्रा परम्परा पूर्ण आस्था एवं विश्वास के साथ चली आ रही है।

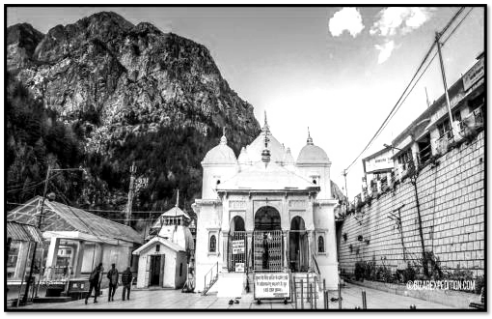

गंगोत्री धाम

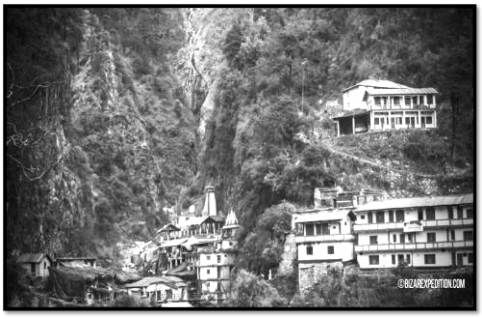

यमुनोत्री धाम

केदारनाथ धाम

बद्रीनाथ धाम

चारधाम तीर्थ यात्रा मार्ग

उत्तराखण्ड में 12वीं सदी तक हिमालय के चारों धामों में देश के कोने–कोने से अनेकों तीर्थ यात्री पैदल चलकर पहुँचते थे। धर्म एवं आध्यात्म की यह तीर्थ यात्रा परम्परा उत्तराखण्ड हिमालय पर स्थित बद्रीनाथ धाम, केदारनाथ धाम, गंगोत्री एवं यमुनोत्री आदि तीर्थ स्थानों तक बड़ी कठिनाइयों से अनेक शारीरिक कष्टों को झेलकर दुर्गम मार्गों से होकर गन्तव्य तक पहुँचती थी। जहाँ पहुँचकर मनुष्य (तीर्थयात्री) स्वयं को धन्य समझता था। यही हिन्दू सनातनी संस्कृति में मोक्ष प्राप्ति का मार्ग भी माना गया है। चारों धामों में पहुँचने के लिए यात्रा का शुभारंभ हरिद्वार में हरि की पौड़ी में विधिविधान से स्नान आदि करके किया जाता था। यहाँ से पैदल तीर्थयात्रा आरंभ होती थी। मार्ग में तीर्थयात्रियों की सेवा हेतु आश्रम, चट्टियाँ, भोजन व्यवस्था, बिस्तर–वस्त्र, औषधियाँ आदि की स्थानीय जनों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के द्वारा निशुल्क व्यवस्था होती थी। क्योंकि हिन्दू धार्मिक परम्परानुसार तीर्थयात्रियों की सेवा करना, उनके यात्रा के दौरान कष्टों को दूर करना आदि भगवान की सेवा मानी जाती थी। तीर्थ यात्रा मार्गों में चट्टियों में मन्दिर बने होते थे। जहाँ पर तीर्थ यात्री विश्राम करके भगवान का भजन–पूजन आदि करते थे। रात्रि विश्राम करने के पश्चात् प्रातः उठकर पुनः पैदल यात्रा प्रारम्भ करते थे। यह यात्रा प्रकृति एवं मानव के बीच एक अद्‌भुत सामंजस्य स्थापित करती थी। थकान हो जाने पर यात्री पेड़ या गुफाओं की तलहटी पर विश्राम कर लेता था। प्यास लगने पर निकट बहते जलस्रोत या नदियों के जल से अपनी प्यास बुझाता था। मार्ग में आते–जाते पथिक या तीर्थ यात्री भगवान की जयघोष करते हुए मनोबल बढ़ाते थे। जिससे यात्रा सुगम हो जाती थी। इन प्राचीन तीर्थ यात्रा मार्गों का विवरण इस प्रकार है।

हरिद्वार से यमुनोत्री यात्रा

हरिद्वार की महिमा वेदों–पौराणिक ग्रन्थों में वर्णित है कि यहाँ पर हरि की पौड़ी में अमृत बूंद पड़ी थी जो भी व्यक्ति या यात्री यहाँ पर स्थित ब्रह्मकुण्ड में स्नानादि करता है। वह पाप मुक्त हो जाता है। इसीलिए हरिद्वार को 'गंगा का द्वार' कहा गया है। जहाँ पर गंगा हिमालय से निकलकर जन–जन को मोक्ष एवं पुण्य प्रदान करती हुई आगे अविरल वेग से प्रवाहमान युगों–युगों से चली आ रही है। अतः इस स्थान से ही तीर्थयात्री विधिपूर्वक यमुनोत्री धाम की यात्रा शुभारंभ करते आये हैं। हरिद्वार से यमुनोत्री धाम तक की लगभग 150 मील की यात्रा ऋषिकेश, नरेन्द्र नगर, टिहरी, बड़कोट, होते हुए पूर्ण की जाती है।

यमुनोत्री धाम हिमालय की गोद में कालिंद पर्वत पर स्थित यमुना नदी का उद्‌गम स्थल है। पुराणों के अनुसार यमुना को सूर्यपुत्री कहा गया है। यमुना को जयमुनि नाम के ऋषि ने कठोर तपस्या करके कालिंद पर्वत से एक पतली जलधारा के रूप में प्राप्त किया था। यमुना ने उसे वरदान दिया कि मुझे आज से तेरे नाम जयमुनि से 'जमुना' नाम से पुकारा जायेगा। अतः जो मेरा ध्यान करेगा उसको पापों से मुक्ति मिलेगी। इस परम्परा से आज भी लाखों तीर्थ यात्री यहाँ पहुँचकर यमुना जी में पूजा–वन्दना करके मोक्ष एवं पुण्य प्राप्त करते है।

अतः पौराणिक काल से ही यमुनोत्री धाम का विशिष्ट महत्व रहा है। यहाँ पर ऋषि–मुनियों, देवताओं एवं सिद्ध पुरूषों ने कठोर तप करके सिद्धि प्राप्त की थी। इसीलिए यह पावन पुनीत तीर्थ भूमि यमुनोत्री धाम के नाम से हिन्दू आस्था एवं विश्वास का जीता जागता प्रमाण है। जहाँ प्राचीन काल से ही तीर्थयात्रा परम्परा अनवरत रूप से चलती आ रही है।

हरिद्वार से गंगोत्री धाम यात्रा

यमुनोत्री धाम के अनुरूप ही हरिद्वार से परम्परानुसार ऋषिकेश, नरेन्द्र नगर टिहरी, उत्तरकाशी, भैरव घाटी होते हुए लोग गंगा के उद्गम स्थल गंगोत्री धाम तक पहुंचते हैं। हरिद्वार से गंगोत्री धाम की दूरी 275 किमी है। तीर्थयात्री पैदल चलकर ही यह यात्रा पूर्ण करते हैं। क्षेत्र का विकास होने के साथ वर्तमान में लोग बसों/कारों द्वारा गंगोत्री धाम तक पहुँचते है। गंगोत्री धाम में स्थित हिमालय शिखर गोमुख हिमनद को गंगा जी का उद्गम स्थल माना गया है। गंगोत्री बुरांस, देवदार व अन्य प्रजाति के वृक्षों से घिरा हुआ क्षेत्र है। इसी स्थान से गंगा जी का अवतरण पृथ्वी पर हुआ था। इसी स्थान पर राजा भगीरथ के हजारों वर्षों के कठोर तप से गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं। राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को मोक्ष प्रदान करके गंगा आगे बढ़ती हुई गंगा सागर में मिल गई थी। अतः ऐसे पावन धाम में पहुँचकर जो भी नर सच्चे भाव से माँ गंगा का स्मरण एवं आचमन करता है वह मोक्ष एवं पुण्य को प्राप्त करके जन्म–मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है। यही गंगोत्री धाम की तीर्थयात्रा परम्परा का विधान है।

हरिद्वार से केदारनाथ यात्रा

केदारनाथ धाम हिमालय पर्वत पर स्थित भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मंदिर का पुनरूद्धार 08वीं सदी में आदि गुरू शंकराचार्य ने करवाया था। यहाँ पर केदारनाथ शिव भगवान शिलारूप में विद्यमान हैं। पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार इस प्राचीन मंदिर को पाण्डवों ने बनवाया था। केदारनाथ यात्रा का महत्व यह है कि जो व्यक्ति केदारनाथ के दर्शन करता है वह सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है। अतः आज भी लाखों श्रद्धालु भक्तजन केदारनाथ तीर्थ की यात्रा करके यहाँ शिव धाम में पहुँचकर शिवमय हो जाते है।

केदारनाथ पहुंचने के लिए गंगा के प्रवेश द्वार हरिद्वार से 25 किमी की दूरी पर स्थित ऋषिकेश से यात्रा प्रारम्भ की जाती है। बस या कार द्वारा की जाने वाली लगभग 204 किलोमीटर की इस यात्रा में देवप्रयाग, श्रीनगर, रूद्रप्रयाग, अगस्त्यमुनि, गुप्तकाशी होते हुए गौरीकुण्ड तक पहुंचा जाता है। गौरी कुंड में शीतल एवं ऊष्ण जल कुण्ड हैं। शीतल जल के कुण्ड को अमृतकुंड एवं ऊष्ण जल कुण्ड को 'गौरीकुण्ड' कहा जाता है। तीर्थयात्री इन कुण्डों में स्नान करके पुण्य फल प्राप्त करते हैं। वर्तमान में गौरीकुण्ड तक बसें पहुँचती हैं। यह अन्तिम बस स्टॉप है। गौरीकुण्ड से रामबाड़ा होकर केदारनाथ मंदिर तक 14 किमी की पैदल यात्रा है। जिसे सामर्थ्यवान लोग पैदल ही करते हैं। जो तीर्थयात्री पैदल नहीं पहुँच पाते, उनको घोड़ा एवं खच्चर में बैठकर केदारनाथ धाम तक पहुंचाने की व्यवस्था उपलब्ध है। वर्तमान में गुप्तकाशी एवं फाटा से केदारनाथ जाने के लिए हेलीकाप्टर की सुविधा भी उपलब्ध है।

हरिद्वार से बद्रीनाथ धाम यात्रा

हरिद्वार हर की पौड़ी में स्नान एवं पूजन करने के पश्चात् तीर्थयात्री पैदल मार्ग से ऋषिकेश, देवप्रयाग, श्रीनगर, रूद्रप्रयाग, गौचर, कर्णप्रयाग, जोशीमठ, पीपलकोटी होकर बद्रीनाथ धाम जाते थे। इस यात्रा में तीर्थयात्री दो–तीन महीनों तक पैदल कठिन यात्रा करके बद्रीनाथ धाम पहुँचते थे। बद्रीनाथ में भगवान बद्रीनारायण जी का विशाल मंदिर अलकनंदा नदी के तट पर विराजमान है। जहाँ पर यात्रियों के ठहने के लिए डाक बंगला, डाकघर, तारघर एवं अस्पताल आदि सुविधाएं पहले से ही उपलब्ध हैं। पहले से ही तीर्थयात्री बद्रीनाथ धाम के दर्शन करके निकट तप्त कुण्ड में स्नानादि करके अपनी यात्रा सफल एवं पुण्यफल दायक मानते थे। क्योंकि महीनों तक

सम–विषम परिस्थितियों को झेलते हुए अनेक शारीरिक कष्टों से भगवान के द्वार पर पहुँचना बहुत बड़ी उपलब्धि माना जाता था।

वर्तमान में बद्रीनाथ तक सड़क मार्ग से बस या कार द्वारा पहुंचने की पूर्ण सुविधा उपलब्ध है। आज सड़क यातायात सुविधाओं के चलते तीर्थयात्री एक ही दिन में प्रत्येक धाम में पहुँच कर अपनी तीर्थयात्रा पूर्ण कर रहे हैं। सड़क यातायात के चलते पैदल मार्ग जो लगभग पचास के दशक तक भी सुरक्षित थे। आज विलुप्त हो चुके है। कई प्राचीन मंदिर–मठ सड़क मार्ग से दूर होने के कारण आवागमन के अभाव में उपेक्षित हो चुके हैं। यही सिलसिला आगे चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमारे पूर्वजों की संजोयी हुई धार्मिक धरोहर, मठ–मंदिर की आस्था एवं भावनायें विलुप्त होकर सांस्कृतिक धरोहर के अवशेष मात्र रह जायेंगे। हमारी धार्मिक एवं आध्यात्मिक संस्कृति के अस्तित्व को बनाये रखते हेतु हमें इस क्षेत्र में ठोस कदम उठाने चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हमें अपने भौतिकवादी जीवन शैली, उपभोगवादी संस्कृति से हटकर धर्म एवं आध्यात्म को बचाये रखने के लिए प्राचीन पैदल तीर्थ मार्गों एवं मठ–मंदिरों का पुनः जीर्णोद्धार करके उनके खोये हुए अस्तित्व को वापस लाकर सजाना संवारना होगा। धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देकर उत्तराखण्ड के देवभूमि का गौरव अक्षुण्य बनाये रखना होगा। जिससे हमारी पुरातन तीर्थयात्रा परम्परा एवं तीर्थ–धामों की आस्था एवं निष्ठा हिन्दू सनातनी संस्कृति के माध्यम से जन–जन द्वारा अनवरत रूप से संचालित होती रहे।

तीर्थयात्रा के दौरान सभी तीर्थयात्री वाहन चलाते समय यातायात के नियमों का पालन करें तथा परिवहन कार्यालय से ग्रीन कार्ड प्राप्त करके ही तीर्थ–धामों की पौराणिक महत्ता, पर्यावरण, धर्म, संस्कृति के गौरव बनाये रखने में हमेशा सहयोगरत् रहें। प्रत्येक वर्ष तीर्थयात्रियों की सकुशल तीर्थ यात्रा हेतु उत्तराखण्ड सरकार, पर्यटन विभाग, सूचना एवं लोक जनसम्पर्क, विभाग एवं संस्कृति विभाग, 'अतिथि देवो भवः' की भावना से कार्यरत रहती है।

तीर्थ एवं तीर्थयात्रा का हिन्दू सनातनी संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए प्रत्येक हिन्दू, तीर्थ स्थानों की यात्रा करने उनके दर्शन–सेवन से अपने जीवन को कृतार्थ करना चाहता है। तीर्थों का प्राचीन पौराणिक ग्रन्थों में वर्णन मिलता है। ये तीर्थ दिव्य गुणों से युक्त होते हैं। सभी तीर्थों में किसी न किसी रूप में देवताओं का वास होता है। उत्तराखण्ड हिमालय में स्थित धामों में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में तीर्थयात्री आते हैं। इन तीर्थों में केदारनाथ स्वयं भगवान शिव हैं, बद्रीनाथ स्वयं विष्णु है, गंगोत्री–यमुनोत्री नदियों के उद्गम स्थलों में साक्षात् देवों का वास है। इन्हीं तीर्थों में प्राचीन ऋषि–मुनियों महापुरूषों के दिव्य दर्शन होते हैं। इन तीर्थों में पहुंचकर दर्शन मात्र से भगवद् प्राप्ति एवं जन–मानस का कल्याण होता है। उत्तराखण्ड की देवभूमि में पग–पग पर 'तीर्थ' हैं। इन तीर्थों का महत्व अनंत है।

पर्यावरण संस्कृति संरक्षण में तीर्थ यात्रियों का महत्व

प्राचीन काल से ही हिन्दू धार्मिक विधान पर्यावरण एवं संस्कृति संरक्षण के लिए तत्पर रहा है। इसी उद्देश्य से प्राचीन काल में पैदल तीर्थयात्रा होती थी। तीर्थयात्रा मार्गों में पैदल चलते हुए यात्री अनेक नदियों, पर्वतों, झरनों, वनों, देव स्थलों, उत्तराखण्ड के तीर्थ तुल्य गांवों, नगरों एवं कस्बों से होकर तीर्थ–धामों तक पहुँचते थे। हरिद्वार से ऋषिकेश होते हुए पदयात्री के लिए विभिन्न चट्टियों में स्थानीय लोगों द्वारा जल व्यवस्था (प्याऊ), भोजन, रात्रि विश्राम, निकट मंदिर में पूजन–भजन व्यवस्था, दैनिक–क्रियाओं में शौचालय एवं स्नान करने के लिए जल स्रोत आदि व्यवस्थायें बनी रहती थीं। स्थानीय लोग एवं स्वयंसेवी तीर्थयात्रियों की सेवा का पूरा ध्यान रखते थे। उनके बीमार हो जाने पर उपचार हेतु परम्परागत औषधियां आदि की सुविधा उपलब्ध होती थी। यह सेवा भाव संस्कृति एवं पर्यावरण का बोध कराती थी।इसी परम्परा से तीर्थयात्रा सदियों से निर्विघ्न रूप से चलती रहती थी। यात्री, मार्गों में चलते हुए थक जाने पर जगह–जगह पर छायादार वृक्षों के नीचे बैठकर विश्राम करते थे। प्यास लग जाने पर निकट जलस्रोत के शीतल एवं स्वच्छ जल से

अपनी प्यास बुझाते थे। वनों के निकट पहुँचते ही कन्द–मूल फलों का आहार करते थे। यात्रा मार्गों में स्थित आश्रमों एवं मठों में पहुंचकर धार्मिक उपदेशों से अपने आध्यात्मिक ज्ञान को बढ़ाते थे। सांयकाल होते ही मंदिरों में पहुंचकर भजन–कीर्तन, जप–तप आदि से मानसिक एवं आत्मिक शांति प्राप्त करते थे। नदियों के संगमों पर स्नान करके अपने पापों एवं कष्टों से मुक्ति की कामना करते थे। मान्यताओं एवं परम्पराओं का निर्वहन करते हुए शारीरिक कष्टों से आत्मसात करते हुए पैदल मार्गों से तीर्थयात्रा करते थे। उत्तराखण्ड के तीर्थों में बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री एवं गंगोत्री धामों में जब वे पहुँचते थे तो स्वतः ही उनके अन्दर धार्मिक एवं आध्यात्मिक शक्ति का संचार हो जाता था। विष्णु, शिव, गंगा, यमुना आदि देवताओं की भक्ति करने लग जाते थे। स्वयं को भगवान के दरबार में पाकर धन्य समझते हुए भगवान से मोक्ष एवं कल्याण की कामना करने लगते थे। इसी उद्देश्य से पैदल तीर्थ यात्रा करके जब वे पुनः अपने घर पहुँचते थे, तो क्षेत्रीय एवं ग्रामीण जनों द्वारा उनका स्वागत होता था। तीर्थ धामों की यात्रा करके सकुशल घर लौटे तीर्थ यात्रियों के चरण छूकर वृद्ध, बच्चे, युवा उनसे आर्शीवाद प्राप्त करते थे। मान्यता थी कि तीर्थ यात्रा से लौटे व्यक्ति में भगवान का वास होता है। वह भी तीर्थ तुल्य हो जाता है। अतः ऐसे महापुरूषों से आर्शीवाद लेकर अपने जीवन को दीर्घायु एवं सुखी बनाने की कामना स्थानीय जनों द्वारा की जाती थी। यही परम्परा आज भी अनवरत रूप से चली आ रही है। यद्यपि उपभोक्ता वादी संस्कृति ने इन प्राचीन परम्पराओं में विकृति पैदा की है। लेकिन धर्म एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति वाले विद्धजनों ने अभी भी इस पौराणिक परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखते हुए धार्मिक पर्यावरण, संस्कृति, तीर्थयात्रा एवं तीर्थ परम्परा के महत्व को अंगीकार किया है। इन्हीं धर्मनिष्ठ जनों, साधु–सन्तों एवं प्रकृति प्रेमी जनों ने आज भी इस देवभूमि के तीर्थों की प्राचीन यात्रा परम्परा के स्वरूप को बनाये रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बद्रीनाथ धाम, केदारनाथ धाम, गंगोत्री धाम एवं यमुनोत्री धाम तथा कैलाश मानसरोवर तीर्थ की यात्राओं को प्रतिवर्ष संचालित करने में तीर्थ यात्रियों का भी विशेष सहयोग प्राप्त होता रहता है। ये तीर्थ यात्रायें ही उत्तराखण्ड हिमालय के तीर्थों के स्वच्छ पर्यावरण, धर्म, संस्कृति एवं आध्यात्मिक ज्ञान का बोध कराते है।

प्राचीन काल से ही हिमालय क्षेत्र में तीर्थयात्रा के अनेक प्रमाण वेद–पुराण एवं धर्म ग्रन्थों में वर्णित हैं। उत्तराखण्ड हिमालयी क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, हरे–भरे वनों, पर्वतों से बहने वाली सदानीरा नदियों, झरनों, पुष्पित–पल्लवित सुरम्य घाटियों, प्राचीन मठ–मन्दिरों एवं ऋषि–मुनियों के आश्रमों, धर्म, संस्कृति एवं आध्यात्म की पावन भूमि के रूप में विश्व विख्यात रहा है। अतः इस क्षेत्र ने धर्म प्रेमियों, प्रकृति प्रेमियों, तपस्वियों को अपनी ओर आकर्षित किया है। धर्मनिष्ठ जनों द्वारा इसी क्षेत्र में प्राचीन तीर्थ परम्परा का विकास हुआ। जब सड़क, रेल, यातायात का विकास नहीं हुआ था तो प्राचीन काल में तीर्थयात्रा पैदल होती थी। तीर्थ–धामों की यात्रा का विशेष महत्व था। मनुष्य अपने चौथे आश्रम में पहुंचकर तीर्थयात्रा द्वारा मोक्ष प्राप्ति का साधन मानता था। इसी उद्देश्य से उत्तराखण्ड हिमालय में स्थित बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री एवं गंगोत्री धाम की तीर्थयात्रा हेतु मनुष्य दुर्गम बीहड़ एवं घने जंगलों, पर्वतीय मार्गों की कठिन चढ़ाई युक्त मार्गों से होकर अपने शारीरिक कष्टों को आत्मसात करते हुए इन तीर्थों तक पहुँचते थे। मान्यतानुसार धार्मिक स्थलों की पैदल यात्रा करके भगवान के द्वार तक पहुँचना पुण्य एवं मोक्ष प्राप्त करना होता था। इसी परम्परानुसार आज भी उत्तराखण्ड में तीर्थयात्रा सदियों से अनवरत रूप से चली आ रही है। यद्यपि आज सड़क, रेल यातायात के साधनों के विकास के चलते परिवर्तन हुआ। आधुनिकीकरण एवं परिवर्तन के युग में हमारी हिमालयी प्राचीन विरासत एवं सांस्कृतिक धरोहर के महत्व को समझने की जरूरत हैं। प्राचीन तीर्थयात्रा, पैदल मार्गों, चट्टियों एवं सड़क सम्पर्क से दूर स्थित प्राचीन मठ–मन्दिरों का पुनः जीर्णोद्धार करके उनके पौराणिक स्वरूप को वापस लाना होगा। धार्मिक पर्यावरण विकसित करके पौराणिक नदियों, अरण्यों धार्मिक स्थलों एवं आश्रमों की धार्मिक विरासत के रूप में संरक्षित एवं संवर्द्धन करने के लिए धार्मिक पर्यटन को विकसित करना होगा। तभी उत्तराखण्ड हिमालयी संस्कृति, धर्म, दर्शन आदि सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत के रूप में सुरक्षित रह पायेगा।